शिकार

कुछ लोगों को शिकार करना बहुत पसन्द होता है। लेकिन कुछ लोगों को शिकार करना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। उन्हें शिकार करने से ही नहीं शिकार करने वालों से भी नफ़रत होती है। एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। एक का नाम रामू था और दूसरे का श्यामू। रामू शिकारी था इसलिए उसे शिकार करना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन श्यामू शिकार के ख़िलाफ़ था। एक दिन दोनों के बीच बहस होने लगी।

श्यामू – देखो रामू, तुम्हें शिकार नहीं करना चाहिए।

रामू – क्यों नहीं करना चाहिए? क्या तुम जानवरों के मालिक हो?

श्यामू – मैं मालिक तो नहीं हूँ, लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुम ग़लत काम करो।

रामू – मुझे तो शिकार करना बहुत पसन्द है। मेरे अनुसार जानवरों का शिकार करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि अगर दुनिया में ज़्यादा जानवर होंगे तो आदमी को रहने की जगह नहीं होगी। जंगली जानवर आदमी को खाने लगेंगे। इसलिए शिकार करना बहुत ज़रूरी है। मुझे शिकार करने का अधिकार है। मुझे शिकार करने से कोई नहीं रोक सकता।

श्यामू – मैं शिकार के बिलकुल ख़िलाफ़ हूँ क्योंकि मैं मानता हूँ कि बेचारे जानवरों को बेमतलब सताना अच्छा नहीं। मेरे विचार में किसी को भी जानवरों को मारने का अधिकार नहीं। इसके अलावा शिकार करना पाप भी होता है। मैं मानता हूँ कि शिकार करने वालों को नरक जाना पड़ता है।

रामू – यह सब बकवास बात है। मुझे तुम्हारी नरक की कहानी में यक़ीन नहीं। मुझे नरक जाने की कोई परवाह नहीं। जब नरक जाना पड़ेगा तब देखा जाएगा। मुझे तो शिकार करने में बहुत मज़ा आता है। मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैं जो चाहूँगा वही करूँगा।

श्यामू – ऐसा नहीं है। तुम जो चाहो वह नहीं कर सकते। तुम्हें समाज के नियम-क़ानूनों के अनुसार चलना पड़ेगा।

रामू – यह समाज क्या होता है? समाज किसने बनाया है? क्या तुम चाहते हो कि मैं अपनी बन्दूक फेंक दूँ? मैंने एक हज़ार रुपए में एक बन्दूक खरीदी और तुम चाहते हो कि मैं उसका इस्तेमाल न करूँ।

श्यामू – अगर तुमने बन्दूक खरीदी है तो यह तुम्हारी ग़लती है। जानवरों को तुम क्यों सताते हो?